गीत की जवानी-4

“इस पोर्न सेक्स स्टोरी में पढ़ें कि मुझे लंड नहीं मिल रहा था तो मैं चुदाई के लिए तरस गयी थी. मेरी सहेली के जन्मदिन पर वो मुझे अपने साथ उसके बॉयफ्रेंड के फार्महाउस ले गयी. …”

Story By: Sandeep Sahu (ssahu9056)
Posted: Sunday, January 19th, 2020
Categories: हिंदी सेक्स स्टोरी
Online version: गीत की जवानी-4

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

गीत की जवानी-4

 यह कहानी सुनें

कॉलेज गर्ल की पोर्न सेक्स स्टोरी में अभी तक आपने पढ़ा कि संदीप मेरे ने चुत और गांड की चुदाई कर ली थी.

> हम दोनों ऐसे कुछ देर ही लेटे थे कि तभी बाहर से आवाज आई- संदीप, गीत … हम आ गए हैं.
>
> यह आवाज मनु की थी, हमने कपड़े नहीं पहने थे.
> मैंने आवाज लगाई- हां दो मिनट रूक.
>
> हमने जल्दी से कपड़े पहने, संदीप का मुझ पर पड़ा वीर्य अभी भी पूरा सूखा नहीं था, इसलिए मुझे कपड़ों के भीतर भी चिपचिपा लग रहा था.

अब आगे :

फिर मैंने दरवाजा खोल दिया.

मैं मनु के साथ लेस्बियन कर चुकी थी उसके बावजूद मैं उससे नजर नहीं मिला पा रही थी.

और वो कुतिया मुझे छेड़े ही जा रही थी- क्या कर रही थीं गीत डार्लिंग … ज्यादा थक गई हो क्या ?

ऐसे ऐसे कई दो अर्थी बातों से वो मुझे परेशान कर रही थी. उसने तो संदीप को भी नहीं बख्शा.

फिर संदीप ने तंग आकर कहा- तुम्हें भी गीत वाला प्रसाद चाहिए क्या, मैं अभी भी थका नहीं हूँ ?
अब मनु की बोलती थोड़ी बंद हुई.

मैं अभी भी अस्त व्यस्त थी, तो मैं घर जाने लायक तैयार हो गई और संदीप ने घर ठीक कर लिया.

जाने के पहले मैंने मनु को इशारा किया, तो उसने उसके भाई को कुछ देर दूसरे कमरे में और उलझाए रखा.

इस बीच मैंने संदीप का चुंबन लेकर विदाई ली.

गांड मरवाने की वजह से मेरी चाल लड़खड़ा रही थी, तो हमने जानबूझ कर सायकल को गिरा दिया और पैर पर थोड़ी मिट्टी मल ली, ताकि घर वालों को लड़खड़ाने का उचित कारण बता सकें.

मनु ने कहा- यार तू तो पहले भी चुद चुकी है, पर लड़खड़ा कैसे गई ?
तो मैंने गांड मराने की बात साफ-साफ बता दी और आज की चुदाई में आए आनन्द को भी बता दिया.

मनु ने कहा- साली तू तो चुद आई और मेरे मन में आग लगा दी.

इसके दूसरे दिन मैं मनु और परमीत लेस्बियन करेंगे, हम दोनों में ये तय हो गया.

दूसरे दिन हमने लेस्बियन से मन तो बहला लिया था, लेकिन रियल चुदाई के मजे से ये

काफी दूर था. वैसे भी इंसान अलग-अलग मजे खोजता है.

फिर उन लोगों ने भी जल्द ही लंड से चुदना तय कर लिया और परमीत तो पहले ही संजय को फंसाने में लगी थी.

संजय भी चूत का दीवाना था, तो सब कुछ जल्दी ही हो गया और दोनों कपल की तरह संबंध रखने लगे.

मनु ने भी गिफ्ट कार्नर वाले को कुछ दिन लिफ्ट दिया, तो उसे भी जल्दी लंड लेने का सुअवसर प्राप्त हो गया.

हम अपने-अपने बॉयफ्रेंड के साथ खुश थे, पर हम तीनों के संबंधों में छोटा-छोटा फर्क था.

मैं जानती थी कि संदीप से मेरा बिछड़ना तय है, तब भी मैं उसे दिल से चाहती थी, जबकि परमीत का संबंध सिर्फ लंड चूत वाला था और मनु का संबंध भी शारीरिक ही लगता था. हम तीनों में से मनु ने अपनी गांड नहीं मरवाई थी.

हम तीनों के लेस्बियन संबंध अब ना के बराबर हो चुके थे. हम सब अपने-अपने सेक्स पार्टनरों के साथ खुश थे. संदीप ने मेरी गांड को पूरी तरह से रवां कर दिया था. अब तो मुझे खुद भी गांड मराने में मजा आने लगा था.

इस बीच परमीत की दीदी की शादी हो गई और परमीत का घरेलू लेस्बियन भी लगभग बंद हो गया.

सब कुछ सही चल रहा था. हमें लंड लेते हुए लगभग एक साल ही हुए थे और संदीप की शादी तय हो गई. मुझ पर तो जैसे पहाड़ टूट पड़ा था. संदीप ने मुझे पहले बता रखा था और संभलने में पूरा सहयोग किया, तो मैं संभल गई. फिर कुछ दिनों बाद ही अकेलेपन की

आदत पड़ गई.

मेरे घर पर भी मेरी शादी की बातें होने लगीं. पर भैया के लिए अच्छा रिश्ता नहीं मिल रहा था और घर वाले हमारी शादी एक ही समय पर कराने के मूड में थे. मतलब ये कि अभी और अकेले दिन गुजारने थे.

उधर परमीत बताती थी कि उन लोगों ने सेक्स के सब तरीके आजमा लिए हैं और अब वो बोर होने लगी है. उसके ऐसा कहने से मन को राहत मिलती थी, क्योंकि आपके पास रहने वाला बहुत मजे करे, तो आपको सहना मुश्किल हो जाता है.

फिर एक दिन मैंने और मनु ने परमीत से कहा- परमीत, तीन दिन बाद तेरा बर्थडे है, क्या प्लानिंग कर रखी है ?

परमीत ने कहा- मेरी प्लानिंग तो तुम लोगों के साथ ही मस्ती करने की थी, पर उस दिन संजय बुला रहा है. मैंने मना कर दिया था, पर वो बहुत जिद कर रहा है.
उसके ऐसा कहते ही मुझे संदीप का बर्थडे और पहला संसर्ग याद आ गया. मैं चुप रही.

लेकिन इस पर मनु ने कहा- यार, उस दिन हमारे घर मेहमान आ रहे हैं, मैं कहीं नहीं जा पाऊंगी. ऐसा कर तू संजय के पास चली जा और हम दूसरे दिन तेरा बर्थडे सेलिब्रेट कर लेंगे.
मैंने भी इस बात की सहमति जताई.

अब परमीत के बर्थडे वाले दिन मैं सुबह से उसके घर उसे बधाई देने पहुंची, तो वह उदास बैठी थी. क्योंकि उसे रात के लिए छुट्टी नहीं मिल रही थी. परमीत ने सहेलियों के पास हॉस्टल में जाकर बर्थडे मनाने और रात रुकने का बहाना बनाया था. दिन में तो कहीं भी जाया जा सकता था, पर संजय ने रात को ही बुलाया था.

इस पर मैं परमीत की मां के पास अपनी सहेली की वकालत करने लगी.

उसकी मां ने कहा- तू भी जा रही है क्या ? तू हां कहेगी, तो मैं तुम दोनों को जाने दे सकती हूँ.

मैं जानती थी कि मुझे भी घर से परमीशन नहीं मिलेगी, पर परमीत ने हां कहने के लिए इशारा किया, तो मुझे हां कहना पड़ा. परमीत की बात तो बन गई, पर अब मैं फंस गई.

मैंने घर जाते वक्त बाहर निकल कर परमीत से कहा- मैं तेरे साथ नहीं जा रही हूँ, तू अकेले ही जाना.

इस पर परमीत गिड़गिड़ाने लगी- यार मैं पकड़ी जाऊंगी, तू मना मत कर.

मैंने उसे घर की समस्या बताई, तो उसने एक उपाय खोज लिया.

दरअसल परमीत की दीदी की शादी पास ही के एक कस्बे में हुई थी, जो लगभग बीस किलोमीटर ही दूर था. तो परमीत ने अपनी दीदी से मेरे भैया के पास फोन लगवाया कि वो अकेली है और आज परमीत का बर्थडे भी है, तो भैया हम दोनों को दीदी के यहां छोड़ दें.

मैंने कहा- इससे क्या फायदा ?
परमीत ने कहा- यार दीदी हमारी अपनी हैं, हम वहां से दीदी की स्कूटी में संजय के पास चले जाएंगे, किसी को कुछ पता नहीं चलेगा.

मुझे भी ये आइडिया अच्छा लगा और मेरे भैया भी दीदी के फोन आने पर मान भी गए. वो हमें दोपहर को ही दीदी के यहां छोड़ भी आए.

पर मैं बार-बार यही सोचती थी कि मेरे इतने कड़क भैया, दीदी की बात मान क्यों गए.

बाद में मैंने ये सवाल दीदी से भी किया, तो पता चला कि कभी भैया भी दीदी के दीवाने रहे हैं.

खैर दिन में दीदी के साथ गप्पें मार कर टाइम निकल गया और जीजा जी दीदी की रोजाना अच्छे से बजा रहे थे, इसलिए बाकी किसी चीज का मूड नहीं बना.

फिर परमीत भी तो रात के लिए अपनी उर्जा बचा के रख रही थी. बस मैं ही सोच रही थी कि वहां परमीत को ऐश करते देख कर सिर्फ दिल जलाना होगा.

कुछ देर बाद हम दोनों संजय के पास जाने के लिए तैयार होने लगे. मुझे तो तैयार होने का बिल्कुल मन नहीं था, पर परमीत के सजने संवरने को देख कर मुझे भी तैयार होना पड़ा.

परमीत आज अप्सरा नजर आ रही थी. परमीत ने मेरे सामने ही कपड़े बदले थे.

उसने लाल ब्रा पेंटी वाला सैट पहना. पेंटी में कपड़े कम और पट्टियां ज्यादा थीं. ऊपर उसने काले रंग का वन पीस वाला शॉर्ट पहन लिया. उसके गोरे बदन पर काला कपड़ा गजब ढा रहा था.

परमीत के उभार कपड़ों से झांक रहे थे और कपड़े इतने चिपके से थे कि ऊपर से भी उनके नाप का अंदाजा हो सकता था. परमीत की गोरी पिंडलियां और सुंदर टांगें भी मनमोहक लग रही थीं. उसने थोड़ी ऊंची हिल वाली सैंडल पहनी … और सुर्ख लाल लिपस्टिक लगा कर कहर ढाने के लिए तैयार हो गई.

मैंने तो सिर्फ एक ही कपड़ा साथ रखा था, वही पहनना पड़ा. मैंने गुलाबी रंग का गोल लांग गाऊन फ्राक पहन लिया, गुलाबी की लिपस्टिक लगा ली और सामान्य सी ही तैयार हो गई.

इतना बताना ठीक है ना … या आप लोगों को और कुछ जानना है ?

हां ठीक है भई … बताती हूँ … मैंने नीले रंग की प्रिंटेड ब्रा पहनी थी और काले रंग की पेंटी, जो मैं सामान्य ढंग से रेग्युलर पहनती हूँ. क्योंकि चुदना तो आज परमीत को था … तो मैं क्यों तैयारी करूं.

वैसे दीदी ने हम दोनों की ही जम कर तारीफ की थी. अब परमीत को तो हड़बड़ी छाई थी, सो हम शाम को छह बजे ही संजय के फार्म के लिए निकल गए. दीदी ने चहकते हुए आल द बेस्ट कहा और संभल कर रहने की सलाह दी.

वैसे आजकल बड़ों की बात सुनता कौन है.

हमने भी हां कहा और अपनी मस्ती में फुर्र से निकल गए. संजय का फार्म हाउस दीदी के घर से पंद्रह सोलह किलोमीटर की दूरी पर रहा होगा. हम वहां लगभग बीस मिनट में पहुंच गए.

समय से पहले पहुंच कर हमने संजय को चौंका दिया.
संजय ने गर्मजोशी से हमारा स्वागत करते हुए कहा- यार परमीत, सरप्राइज तो मैं तुम्हें देना चाहता था, पर गीत को साथ लाकर तुमने मुझे सरप्राइज दे दिया.

मैंने भी मौके पर चौका मारा और कहा- वैसे कवाब में हड्डी बनने का शौक हमें भी नहीं है संजय बाबू !

इस पर संजय ने भी बड़े अंदाज में कहा- तुमको हड्डी समझने वाला कोई गधा ही होगा, तुम तो पूरी कवाब हो, वो भी लजीज.

उसकी बात को सबने हंसी में टाल दिया और अन्दर चले गए, पर उसकी बातों ने मेरी पेंटी

सुलगा दी थी. हालांकि अपनी सहेली के यार पर डोरे डालने के बारे में मैंने कभी नहीं सोचा था. अन्दर हॉल को बड़े रंगीन अंदाज से सजाया गया था.

आज की रात को संजय परमीत के लिए यादगार बनाना चाहता था.

हॉल के बीचों बीच एक मेज को लगाया गया था, जिस पर खूबसूरत तीन लेयर वाला खूबसूरत सा केक रखा था. हॉल के चारों ओर सजावट की गई थी और उस पूरे फार्म हाउस में हमारे अलावा कोई नहीं था. संजय परमीत के पास आकर उसकी आंखों पर पट्टी बांधने लगा और ऐसा ही उसने मेरे साथ किया.

हमारे पूछने पर उसने सरप्राइज की बात कही.

हम दोनों कुछ देर ऐसे ही रहे. फिर कुछ जूतों की आवाज आई और साथ ही संजय की आवाज आई- अब पट्टी खोल लो.
हमने पट्टी खोला तो संजय के साथ दो लोग खड़े थे.
परमीत ने कहा- सरप्राइज कहां है ?
संजय ने उन दोनों की ओर दिखाते हुए कहा- ये क्या हैं … यही तो सरप्राइज़ हैं.

हम दोनों ही संजय की बात नहीं समझ रहे थे, वो लोग सरप्राइज कैसे हो सकते थे.

परमीत ने दूसरे तरीके से बात रखी- अच्छा तो ये बताओ कि मेरा बर्थडे गिफ्ट कहां है ?
इस बार फिर संजय ने कहा- यही तो हैं तुम्हारा बर्थ डे गिफ्ट !

इससे हम दोनों का दिमाग खराब हो चुका था. फिर परमीत ने कहा- साफ-साफ बताओ … तुम कहना क्या चाहते हो ?
तब संजय ने कहा- यार परमीत तुम हर बार चुदाई के समय कहती हो ना … काश तुम्हारे तीनों छेदों को शानदार लंड मिले … तो लो आज मैंने तुम्हारी इच्छा पूरी कर दी. इसमें से

ये एस्कार्ट है, इसे पेड सेक्स वर्कर भी कह सकती हो, दूसरा भी एस्कार्ट ही है, पर मेरा दोस्त है. उसी ने मुझे ये आइडिया दिया था.

हम एस्कार्ट, सेक्स वर्कर या जिगोलो जैसे शब्द से परिचित थे. मगर उनको अपने सामने देख कर हम दोनों स्तब्ध रह गए.

परमीत तो भड़क ही उठी और मेरी आंखों में भी गुस्सा था. लेकिन चूत में पानी आ गया था.

परमीत ने संजय से कहा- यार, कहने की बात अलग होती है. तुम पागल हो गए हो या मुझे रंडी समझ रखा है … मैं ये सब नहीं करने वाली, इन्हें यहां से भगाओ … नहीं तो हम दोनों यहां से जा रही हैं.

संजय शांत रहा.

परमीत ने तेज आवाज में कहा- अच्छा तो तुम इन्हें नहीं भगाओगे … ठीक है … चल गीत, हम चलती हैं.

तभी संजय ने परमीत का हाथ पकड़ लिया और कहा- अरे यार, तुम कब से पुराने ख्यालातों वाली बन गईं. मैंने तो सोचा था कि तुम मेरे सरप्राइज से बहुत खुश होओगी.

संजय ने मेरी ओर देखते हुए अपना लहजा बदला और कहा- ये बात और है कि तुमने मुझे ही सरप्राइज दे दिया.

अब परमीत ने फिर भड़क कर कहा- रंडी बनाकर तमाशा बनाना चाहते हो मेरा … और इसे आधुनिक विचार समझते हो. अब तो मैं तुमसे भी नहीं मिलूंगी … चल गीत यहां से चलते हैं.

संजय ने फिर कहा- यार जिगोलो का मतलब होता है कि वो महिला को खुश करे, उसकी सेवा करे. इसमें तमाशा खुद जिगोलो का बनता है, उसी बात के तो उसे पैसे मिलते हैं. अच्छा सुनो अगर तुम्हें सेक्स नहीं करना, तो मत करो, पर इन्हें नचवा तो सकते हैं और मर्दों का तमाशा बना कर मजा तो ले सकते हैं. आखिर मर्द भी तो महिलाओं के तमाशे बनाते हैं, आज तुम भी बदला ले लो.
संजय की इस बात पर परमीत ने हां में सर हिलाया और कहा- जो मैं कहूंगी सिर्फ वही होना चाहिए … नहीं तो मैं रेप का केस भी कर सकती हूं.

अब मैं समझ गई कि आज तो हमारी भयंकर चुदाई निश्चित है, क्योंकि सेब पर चाकू गिरे या चाकू पर सेब मतलब तो एक ही है … और मैं ठहरी लंड की प्यासी चुदैल … मुझे तो जैसे जन्नत का सुख नसीब होने वाला था.

कुछ देर बाद मामला ठंडा हुआ, तो संजय ने परिचय करवाया- ये मेरा दोस्त रजत है.

इतने पर परमीत ने टोका- दोस्त नहीं, सिर्फ जिगोलो कहो … और वो जिगोलो की तरह ही रहेगा भी.
संजय ने फिर बात सुधारते हुए कहा- ये जिगोलो रजत है और ये उसका साथी जिगोलो हसन है. रजत इंडिया का है और हसन दुबई से आया है. फिलहाल इंडिया में सर्विस दे रहा है.

परमीत ने उन दोनों को दूर सोफे में बैठने को कहा और पास ही टेबल में रखी दारू की एक बोतल उनको देते हुए कहा- पीकर तैयार रहो … जब तक मैं ना कहूं हमें डिस्टर्ब नहीं करना.

वो दोनों दारू लेकर दूर सोफे पर बैठ गए.

उनके जाते ही परमीत ने मुँह बनाते हुए कहा- तुम ऐसे लोगों से दोस्ती करते हो ?
तब संजय ने कहा- नहीं यार वो तो जिगोलो ही हैं, बड़ी मुश्किल से जुगाड़ हुआ है. तुम्हें जिगोलो से अच्छा नहीं लगेगा, सोच कर दोस्त बता रहा था.

उसकी बात से हम सब हंस पड़े और बात टल गई. हमारी टेबल पर भी दारू रखी थी, जिसे संजय ने पैग बना कर पिया.

उससे पहले हमारे लिए बीयर की तीन बोतल ला दी थीं. उसे पता था मेरे लिए एक और परमीत के लिए दो बीयर बहुत होंगी.

हम सब जल्दी ही आ गए थे, तो समय की कोई कमी नहीं थी. सबसे पहले हम सबने मिलकर पैग बनाए और चियर्स करके परमीत को जन्मदिन की बधाई दी. केक काटने का फैसला नाच गाने के बाद लिया गया और फिर धीरे-धीरे काजू बादाम और रोस्ट चिकन के वाले चखने के साथ दारू और बीयर का दौर चलने लगा.

संजय और परमीत बहुत सी प्राइवेट बातें भी खुलेआम करने लगे.

सभी पर ड्रिंक का नशा छा रहा था, पर मुझे तो लंड का नशा हो रहा था. मैं दूर बैठे रजत और हसन को देखने लगी थी. रजत के नाम से चमक का अहसास होता है, पर वो तो बहुत काला सा आदमी था.
उसकी उम्र 35 साल की रही होगी. मतलब हमसे 15 साल बड़ा था. उसकी हाइट सामान्य थी, लेकिन फिटनेस गजब की थी. उसको देखकर ही उसकी ताकत और स्टेमिना का अंदाजा लगाया जा सकता था.

मैंने तो मन ही मन सोचना भी शुरू कर दिया था कि इससे अभी चुदना चालू करूंगी, तो सुबह तक इसका पानी निकल जाए, वही बहुत है.

मन की बातें निगोड़ी चूत ने भी सुन ली और रस बहाने लगी.

फिर मन में एक और लालच आया और मैं दूसरे बंदे को निहारने लगी. वो बहुत गोरा था, जरा दुबला पतला भी था, लेकिन बहुत लंबा सा लड़का था. उसकी उम्र 28 की नजर आ रही थी … क्लीन शेव था. कुल मिलाकर वो स्मार्ट लग रहा था.

चूंकि विदेशियों के लंड तो लाजवाब होते ही हैं, ये सोचकर ही मेरे मन में बेचैनी होने लगी थी. मैं उन्हें ललचाई नजरों से देख रही थी और परमीत ने मेरी चोरी पकड़ ली.

फिर परमीत ने कहा- अरे कुतिया, तेरी चूत पानी बहा रही है क्या … जा फिर बैठ जा वहीं, उनके पास … यहां बैठी क्यूं तड़प रही है.
मैंने भी जवाब देते हुए कहा- तू तो अपने आशिक के साथ लगी पड़ी है और मुझे यहां बोर कर रही है. ठीक है मैं उनको देखती हूं, तब तक तुम दोनों ड्रिंक खत्म करो … फिर खाना खाएंगे.

ये कह कर मैं उनके पास जाकर एक चेयर लेकर बैठ गई. अब हम एक ही हॉल के दो कोनों पर अलग-अलग दूरी बना कर बैठे थे. हम एक दूसरे को देख सकते थे, पर बातें सुनाई नहीं दे रही थीं. एक दूसरे को कुछ बोलने के लिए जोर से चिल्लाना पड़ता था.

मेरे पास जाने से रजत और हसन के चेहरे पर मुस्कान बिखर गई. मैंने परमीत के व्यवहार के लिए सॉरी कहते हुए बात शुरू की.
तो उन्होंने कहा- कोई बात नहीं मैडम, हमें ऐसी बातों की आदत है.

मैं उनके बात करने से समझ गई कि हसन को हिन्दी कम आती है. अपनी बात मैं रजत से ज्यादा करूं, तो ही ठीक रहेगा.
मैंने कहा- और क्या-क्या करते हो तुम लोग ?

रजत ने उत्तर दिया- सब कुछ … पर ज्यादातर लोग हमसे सेक्स के अलावा डांस और मालिश ही करवाते हैं.

उसने बात खत्म करते हुए एक लाइन और जोड़ दी, आपको मालिश करवाना है क्या मैडम ?
उसके ऐसे प्रश्न के लिए मैं तैयार नहीं थी. मैंने कहा- सोचती हूँ.
उसने फिर पूछ लिया- क्या आप हमारे साथ ड्रिंक लेंगी ?
मैंने मना कर दिया, तो उसने कहा- तो सिगरेट चलेगी ?

इस पर मैंने उसकी आंखों में देखा, तो लगा मानो कि मुझे किसी ना किसी चीज के लिए तो हां कहनी ही पड़ेगी.

मैंने कहा- अच्छा ठीक है लाओ दो.
उसने कहा- मैडम हमारे पास सिगरेट नहीं है, आप अपनी सहेली से कहिये ना सिगरेट के लिए.

मैं उसकी चालाकी के लिए हंस पड़ी और वो मेरी हंसी को इंज्वाय करने लगा.

मैंने दूर से चिल्ला कर कहा- परमीत सिगरेट का पैकेट है क्या ?
संजय ने उत्तर दिया- हां है.
मैंने कहा- इसे दे दो.

रजत जाकर सिगरेट ले आया. रजत मुझे सिगरेट ऐसे ही देने लगा.
मैंने कहा- और सुलगाएगा कौन ?

तो उसने अपने होंठों पर सिगरेट रख कर लाइटर से जलाई. मैं उसके अनुभव को देख कर उसकी चुदाई अनुभव को समझने का प्रयास कर रही थी. अब तक हसन केवल डमी की

तरह बैठा था.

मैंने सोचा क्यों ना मैं भी इन जिगोलो का पूरा उपयोग करूं. फिर मैंने रजत से सिगरेट लेकर कश लेते हुए कहा- इससे कहो, जल्दी से ड्रिंक और सिगरेट खत्म करे और मुझे डांस दिखाए … और चलो तुम मेरे पैर दबाओ.

रजत ने 'जी मैडम..' कहा और मैं सोफे पर बैठ गई.

रजत नीचे पैरों के पास बैठ गया, मेरा सिगरेट का कश चल ही रहा था, जबकि रजत ने आधी सिगरेट पी कर ही रख दी और मेरे आदेश के पालन में लग गया.

शायद हसन भी हिन्दी समझता था, उसने भी एक बार में अपना पैग खत्म किया और सिगरेट तो पी ही नहीं, वहीं रख दी. उसने रजत से म्यूजिक के लिए पूछा, तो रजत ने संजय से पूछा.

संजय के कहने पर एक कोने पर सैट करके रखे हुए म्यूजिक सिस्टम को ऑन कर दिया.

ध्वनि थोड़ी तेज थी, जिसे मैंने स्लो करवाई और फिर अंग्रेजी गाने में हसन नाचने लगा. उसका नृत्य अच्छा ही था, पर वो बड़ा अजीब लग रहा था.

इधर रजत मेरे पैरों को कपड़े के ऊपर से ही दबाने लगा. मुझे राजा रानी वाली फीलिंग आ रही थी. मैंने एक बार परमीत की ओर देखा, तो संजय परमीत आपस में लिपट कर चुंबन कर रहे थे.

कुछ देर पैर दबाने के बाद रजत ने कपड़े ऊपर करने का कहा, तो मैंने खुद ही कपड़ों को जांघों तक उठा दिया.

रजत ने एक बारगी मेरे नंगे पैरों को देखा और सहलाते हुए कहा- मैडम आप लाजवाब हो!

मैंने कोई जवाब नहीं दिया हालांकि उसकी बातों और छुअन ने मन की आग को भड़का दिया था.

अब तक मेरी चूत गीली हो चुकी थी, बीयर का नशा भी छाने लगा था और मैं अब मजे के मूड में आने लगी थी.

मैंने दूसरी सिगरेट पैकेट से निकाल कर सुलगाई और लंबा कश लेकर हसन से कहा- सुनो तुम सिर्फ चड्डी पहन कर नाचो.

हसन ने नाचते हुए ही अपने कपड़ों को एक अदा के साथ उतारना शुरू कर दिया.

पोर्न सेक्स स्टोरी जारी रहेगी.

इस नंगी सेक्स कहानी पर आप अपनी राय इस पते पर दें.
ssahu9056@gmail.com

Other stories you may be interested in

मैं अपने यार से होटल में चुद आयी

मेरे प्यारे दोस्तो, अंतर्वासना पर मेरी चुदाई कहानी में आपका स्वागत है. मेरा नाम रश्मि है, मैं दिल्ली से हूं. मैं एक हाउसवाइफ हूं, मेरी उम्र 29 साल है. मैं एक भरे हुए बदन की औरत हूं. मेरे बूब्स का […]
Full Story >>>

गीत की जवानी-3

इस गर्म सेक्स स्टोरी में अब तक आपने पढ़ा कि संदीप ने मेरे दोनों पर्वतों का बराबर मर्दन करते हुए सम्मान दिया और कुछ देर तक वहां अपनी जिह्वा का करतब दिखाने के बाद वापस चूत की ओर लौटने लगा. […]
Full Story >>>

पड़ोसी का लंड देख खुद को रोक ना पाई

लेखक की पिछली हिंदी सेक्स स्टोरी : सेक्सी भाभी ने मेरी चोरी पकड़ ली नमस्कार दोस्तो, मैं राज रोहतक से फिर हाजिर हूँ एक और कहानी लेकर ये कहानी मेरी एक महिला मित्र की है जिससे पहले मेरी फेसबुक पर बात […]
Full Story >>>

नादान लड़की की पहली बार चुदाई

लेखक की पिछली कहानी थी कुंवारी लड़की की चुदाई का सपना सेवक राम मनवानी हमारे मुहल्ले में रहते हैं. उनके परिवार में उनका पच्चीस साल का बेटा दीपक और बीस साल की लड़की ज्योति है. सेवक राम की कपड़े की […]
Full Story >>>

गीत की जवानी-2

अब तक की मेरी इस रोमांटिक सेक्स स्टोरी में पढ़ा कि गीत और मनु संदीप के जन्मदिन पर उसके घर पहुंची और वहां कोई उनका बेसब्री से इंतजार कर रहा था. वो कोई और नहीं संदीप ही था जो नजरें […]
Full Story >>>